

# लेखाशास्त्र

साझेदारी खाते

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक



12120

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी  
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

12120 – लेखाशास्त्र

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-727-2

### प्रथम संस्करण

अप्रैल 2007 चैत्र 1929

### पुनर्मुद्रण

नवंबर 2007, दिसंबर 2008,

जनवरी 2010, जनवरी 2011,

मार्च 2013, मार्च 2019,

नवंबर 2019 और अप्रैल 2021 (NTR)

### संशोधित संस्करण

अक्टूबर 2022 कार्तिक 1944

### पुनर्मुद्रण

मार्च 2024 चैत्र 1946

दिसंबर 2024 अग्रहायण 1946

PD 22T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, 2007, 2022

₹ 135.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर  
मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और  
प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016  
द्वारा प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, 203-204,  
डी.एस.आई.डी.सी. कॉम्प्लेक्स, ओखला, इंडस्ट्रियल  
एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित।

### सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। खड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

### एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे

बनाशंकरा III स्ट्रेज

बैंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस

निकटः धनकल बस स्टॉप पनितही

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781021

फोन : 0361-2674869

### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम.वी. श्रीनिवासन

मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी): जहान लाल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

संपादक : बिज्ञान सुतार

उत्पादन अधिकारी : दीपक कुमार

आवरण

श्वेता राव

## आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षा और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरीयत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती हैं। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन सी ई आर टी इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर आर. के. ग़ोवर की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, इस

योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन सी ई आर टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली  
20 नवंबर 2006

निदेशक  
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

## पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड-19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

**पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है —**

- एक ही कक्षा में अलग-अलग विषयों के अंतर्गत समान पाठ्य सामग्री का होना;
- एक कक्षा के किसी विषय में उससे निचली कक्षा या ऊपर की कक्षा में समान पाठ्य सामग्री का होना;
- कठिनाई स्तर;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हों;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

**वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।**

## भारत का संविधान उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक <sup>1</sup>[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,  
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म  
और उपासना की स्वतंत्रता,  
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,  
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और <sup>2</sup>[राष्ट्र की एकता  
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता  
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख  
26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को  
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

# पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

## अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

## मुख्य सलाहकार

आर. के. ग्रोवर, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), स्कूल आफ मैनेजमेंट स्टडीज़, इग्नू, नयी दिल्ली।

## सदस्य

एच.वी. झांब, रीडर, खालसा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय  
एन. के. ककड़, निदेशक, महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट, रोहणी, नयी दिल्ली  
एस.एस. सहरावत, सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन, चंडीगढ़  
एस.सी.हुसैन, प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली  
ओबल रेड्डी, प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश  
डी. के. वेद, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी नयी दिल्ली  
दीपक सहगल, रीडर, दीन दयाल उपाध्याय कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय  
राजेश बंसल, पीजीटी वाणिज्य, रोहतगी ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नयी सड़क, दिल्ली  
वनिता त्रिपाठी, लेक्चरर, वाणिज्य विभाग, दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकॉनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली  
सविता शंगारी, पीजीटी वाणिज्य, ज्ञान भारती स्कूल, साकेत, नयी दिल्ली  
सुधीर सपरा, पीजीटी वाणिज्य, केंद्रीय विद्यालय, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश

## हिन्दी अनुवाद

अमर सिंह सचान, अनुवादक, आर. के. पुरम, नयी दिल्ली  
राजेश बंसल, पीजीटी वाणिज्य, रोहतगी ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नयी सड़क, दिल्ली

## सदस्य-समन्वयक

शिप्रा वैद्या, प्रोफेसर (वाणिज्य), सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली

## आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पुस्तक के निर्माण एवं पुनरीक्षण में सहयोग देने हेतु पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, सविता सिन्हा, प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष (सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग) के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को पूर्ण रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया। हम उन सभी वाणिज्य शिक्षकों के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक की क्यू. आर. कोड की अतिरिक्त पाठ्य सामग्री तैयार करने में अपना योगदान दिया है।

परिषद्, इस संस्करण के पुनर्संयोजन के लिए पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों एवं विषय सामग्री के विश्लेषण हेतु दिए गए महत्वपूर्ण सहयोग के लिए सविता शांगरी, पी.जी.टी. (सेवानिवृत्त), साकेत, नयी दिल्ली; सीमा श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, डाइट, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली; संदीप सेठी, पी.जी.टी., एस.वी. पब्लिक स्कूल, जयपुर; गुरमीत सिंह ग्रेवाल, सी.ए. एवं प्रकेडमिक, वसंत कुंज, नयी दिल्ली; सुंदर सिंह सहरावत, डी.सी. (सेवानिवृत्त), सक्षम अपार्टमेंट्स, सेक्टर 10, द्वारका, नयी दिल्ली; और शिप्रा वैद्य प्रोफ़ेसर, वाणिज्य, डी.ई.एस.एस., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, मुसरत परवीन, कॉपी एडिटर; अनिल शर्मा, प्रूफ रीडर के सहयोग हेतु अपना हार्दिक आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को पूर्ण रूप देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी संदर्भ में प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का सहयोग भी उल्लेखनीय है।



## विषय-सूची

|  |            |
|--|------------|
| आमुख   | iii        |
| पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन                               | v          |
| <b>अध्याय 1 साझेदारी लेखांकन – आधारभूत अवधारणाएँ</b>                         | <b>1</b>   |
| 1.1 साझेदारी की प्रकृति  | 2          |
| 1.2 साझेदारी विलेख   | 3          |
| 1.3 साझेदारी खातों के विशिष्ट पहलू   | 5          |
| 1.4 साझेदारों के पूँजी खातों का अनुरक्षण                                     | 5          |
| 1.5 साझेदारों के बीच लाभ का विभाजन   | 9          |
| 1.6 एक साझेदार को लाभ की गारंटी  | 27         |
| 1.7 पूर्व समायोजन  | 33         |
| <b>अध्याय 2 साझेदारी फर्म का पुनर्गठन: साझेदार का प्रवेश</b>                 | <b>49</b>  |
| 2.1 साझेदारी फर्म के पुनर्गठन के प्रकार                                      | 49         |
| 2.2 साझेदार का प्रवेश  | 50         |
| 2.3 नया लाभ विभाजन अनुपात  | 51         |
| 2.4 त्याग अनुपात   | 54         |
| 2.5 ख्याति   | 57         |
| 2.6 संचित लाभों और हानियों का समायोजन  | 78         |
| 2.7 परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन और दायित्वों का पुनर्निर्धारण            | 79         |
| 2.8 पूँजी का समायोजन   | 85         |
| 2.9 वर्तमान साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन                      | 97         |
| <b>अध्याय 3 साझेदारी फर्म का पुनर्गठन – साझेदार की सेवानिवृत्ति / मृत्यु</b> | <b>110</b> |
| 3.1 सेवानिवृत्ति/मृत साझेदार को देय राशि का निर्धारण                         | 110        |
| 3.2 नया लाभ विभाजन अनुपात  | 111        |
| 3.3 अभिलाभ अनुपात  | 112        |
| 3.4 ख्याति का व्यवहार  | 117        |

|  |            |
|--|------------|
| 3.5 परिसंपत्तियों तथा दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन के लिए समायोजन | 123        |
| 3.6 संचित लाभों तथा हानियों का समायोजन                           | 126        |
| 3.7 सेवानिवृत्त साझेदार को देय राशि का निपटारा                   | 129        |
| 3.8 साझेदारों की पूँजी का समायोजन                                | 138        |
| 3.9 साझेदार की मृत्यु  | 145        |
| <b>अध्याय 4 साझेदारी फर्म का विघटन</b>                           | <b>163</b> |
| 4.1 साझेदारी का विघटन  | 163        |
| 4.2 फर्म का विघटन  | 164        |
| 4.3 खातों का निपटारा   | 165        |
| 4.4 लेखांकन व्यवहार  | 167        |